International Journal of Applied Research 2017; 3(4): 903-906

**ISSN Print:** 2394-7500
**ISSN Online:** 2394-5869
**Impact Factor:** 8.4
IJAR 2017; 3(4): 903-906
www.allresearchjournal.com
Received: 22-01-2017
Accepted: 28-03-2017

डॉ0 अनुराधा गोयल
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, बरेली कॉलेज, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत

**Corresponding Author:**
डॉ० अनुराधा गोयल
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, बरेली कॉलेज, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत

# आधुनिकीकरण का समाज पर प्रभाव

डॉ0 अनुराधा गोयल

प्रस्तावनाः

आधुनिकीकरण की प्रक्रिया ने वैज्ञानिक सोच के आगमन के बाद से मनुष्य के जीवन और मानव प्रथाओं में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए हैं। मनुष्य सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सौंदर्य और आध्यात्मिक जीवन के क्षेत्रों में तर्क और व्यवहार के माध्यम से विचार और व्यवहार के नए दृष्टिकोणों को सामने ला रहा है। सामाजिक अलगाव के कारण महिलाएं विकास के कई लाभों से वंचित थी। सामान्य रूप से मानव जागरूकता और विशेष रूप से लोकतंत्र के आगमन के साथ, महिलाओं ने एक नया सामाजिक दर्जा प्राप्त किया। यह सब शिक्षा का परिणाम है। इसके अलावा, नारी शिक्षा पर अमिट छाप आधुनिकीकरण की प्रक्रिया ने भी छोड़ दी है, इसलिए, शिक्षा और आधुनिकीकरण की प्रक्रिया दोनों को महिलाओं के विकास के लिए जिम्मेदार माना गया है। देश की आजादी के बाद से, भारत में हमारे जीवन के विभिन्न पहलुओं में सामाजिक परिवर्तन अभूतपूर्व हो गया है। देश की नीतियों और कार्यक्रमों को विशेष रूप से शिक्षा, अर्थव्यवस्था, सार्वजनिक स्वास्थ्य और सामान्य जनकल्याण के क्षेत्र में शुरू किया गया है। इन कार्यक्रमों ने हमारे सामाजिक जीवन की प्रक्रिया के परिवर्तन पर सकारात्मक प्रभाव डाला है। आधुनिक शिक्षा ने जीवन के प्रति नए मूल्यों, मानदंडों, आशाओं और आकांक्षाओं को जन्म दिया है। इस परिवर्तन ने देश के कोने–कोने में व्याप्त सामाजिक परिवर्तन की शक्तियों को उत्पन्न किया है। आदिवासी क्षेत्र जो अंग्रेजों के दौरान राष्ट्रीय जीवन की मुख्य धारा से बाहर रहे, इन क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को सामाजिक परिवर्तन और आधुनिकीकरण की सामान्य प्रवृत्ति से अवगत कराया गया है और अब उनको राष्ट्रीय जीवन की प्रगति पर लाया गया है।

आधुनिकीकरण की अवधारणा, लंबे समय से एक सार्वभौमिक परिभाषा और विश्लेषण के उपयुक्त स्तर पर सहमति की कमी से ग्रस्त है। यह शब्द सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया पर लागू होता है, जिससे कम विकसित समाज अधिक विकसित समाजों से सामान्य विशेषताओं का अधिग्रहण करते हैं (डेविड, सिल्स, 1972), इसका उपयोग तर्कसंगतता और धर्मनिरपेक्षता के विकास और एक ऐसी प्रक्रिया के लिए किया जाता है जिसके द्वारा मनुष्य को अत्याचारी शासन, कुरीतियों से छुटकारा मिल जाए, जैसे कि अंधविश्वास से। यह अर्थशास्त्र और राजनीति में, सामाजिक व्यवहार में व्यक्तिगत दृष्टिकोण में होने वाले परिवर्तनों से भी संबंधित है। शहरीकरण कैसे होता है, कैसे सामाजिक संरचना में परिवर्तन होता है, शैक्षिक प्रणाली कैसे परिवर्तित होती ह और औद्योगीकरण कैसे होता है। वास्तव में, आधुनिकीकरण का अर्थ वर्तमान समय के अनुकूल होना है, पुरानी आदतों, रीति–रिवाजों को त्यागते हुए परिस्थितियों और आवश्यकताओं के अनुसार परंपराओं और दृष्टिकोंण में परिबर्तन होता है। आज जो माना जाता है, वह कुछ वर्षों के बाद शायद वैसा न हो। कुल मिलाकर यह एक के बाद एक चरण में हासिल की जाने वाली एक सतत प्रक्रिया है।

आधुनिकीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिससे आधुनिक वैज्ञानिक ज्ञान का समाज में प्रचार एवं प्रसार होता है जिससे समाज में व्यक्तियों के स्तर में सुधार होता है और समाज अच्छाई और विकास की ओर बढ़ता है। –अलातास

आधुनिकीकरण परिवर्तन की एक प्रक्रिया है इसका संबंध मुख्य रूप से विचारों एवं मनी व्रतियों के तरीकों में बदलाव, नगरीकरण में वृद्धि साक्षरता का बढ़ना प्रति व्यक्ति आय का बढ़ना तथा राजनीतिक सहभागिता में वृद्धि जैसे परिवर्तन से होता है। –डेनियल लर्नर

आधुनिकीकरण को प्रक्रिया है जिससे ऐतिहासिक रूप से उत्पन्न संस्थाएं तेजी से बदलती हुई नई जिम्मेदारियों के साथ अनुकूलित होती हैं जिसमें वैज्ञानिक प्रगति से जुड़ी अपने परिवेश पर नियंत्रण की क्षमता वाले मनुष्य के ज्ञान में अभूतपूर्व वृद्धि दिखाई देती है। –सी.ई.ब्लेक

आधुनिकीकरण को सामाजिक परिवर्तन की एक प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है जिसमें सामाजिक गतिविधि के आर्थिक घटक में विकास होता है। जब राष्ट्र या राज्य के स्तर पर विचार किया जाता है, तो व्यापक रूप से साझा राय होती है। धारणा का तात्पर्य ''वृद्धि'' शब्द में निहित परिवर्तन से है। इसे मानव समस्याओं के समाधान के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग के रूप में, संक्षेप में व्याख्यायित किया जा सकता है। इस तरह के परिवर्तन निश्चित रूप से सामाजिक संरचना के एक व्यापक तन्त्र को प्रभावित करते हैं, जो राजनीतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और जनसांख्यिकीय और यहां तक कि व्यक्तित्व में परिवर्तन तक के क्षेत्र में होते हैं।

कुछ सामाजिक वैज्ञानिकों ने सुझाव दिया है कि आधुनिकीकरण की किसी भी परिभाषा का प्रारंभिक बिंदु समाजों की प्रकृति में नहीं है बल्की लोगों की विशेषताओं में है, जो उस समाज का हिस्सा होते हैं (टोरस्टन एंड हुसैन, 1985, इंकेल्स एंड स्मिथ 1974)। इस प्रकार यह लोगों का स्वभाव और मानसिक रवैया है, जो संगठन के उच्च स्तर को बदलने के लिए एक प्रकार की पूर्व कन्डीशन है। इंकेल्स एंड स्मिथ (1974.3) ने अपने प्रसिद्ध शोध ''बीकमिंग मॉडर्न'' में व्यक्तिगत आधुनिकता के अनुभवजन्य सत्यापन का एक व्यवस्थित अन्वेषण दिया। इंकेल्स और उनके सहकर्मियों (1974) ने ''आधुनिक'' शब्द का इस्तेमाल व्यक्तिगत कामकाज की एक विधा के रूप में किया। छह विकासशील देशोंः अर्जेंटीना, चिली, भारत, इजराइल, नाइजीरिया और तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान (बांग्लादेश) में से प्रत्येक में लगभग 1000 श्रमिकों पर आधारित इंकलेस, और स्मिथ की शोध रिपोर्ट ने निष्कर्ष निकाला है कि आधुनिक समाजों में पुरुषों द्वारा साझा किए गए कुछ दृष्टिकोण हैं, जिसमें सांस्कृतिक अंतर शमिल नहीं है। आधुनिक व्यक्ति के संदर्भ में इलेक्स इनकेल्स और स्मिथ द्वारा दिए गए 'दृष्टिकोण और व्यवहार पैटर्न' की एक श्रृंखला की रूपरेखा इस प्रकार हैः

- नए विचारों और नए तरीकों को स्वीकार करने की तत्परता,
- राय व्यक्त करने की तत्परता,
- एक सकारात्मक समय बोध जो पुरुषों को अतीत की तुलना में भविष्य और वर्तमान में अधिक रुचि रखता है।
- समय की पाबंदी की बेहतर समझ,
- योजना, संगठन और दक्षता के लिए एक बड़ी चिंता,
- दुनिया से सीखने योग्य देखने की प्रवृत्ति,
- विज्ञान और प्रौद्योगिकी में विश्वास और
- समान वितरणात्मक न्याय में विश्वास।

टीसी एस एन ईसेनस्टेड (1969) के अनुसार ''ऐतिहासिक आधुनिकीकरण उस प्रकार की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्थाओं के प्रति परिवर्तन की प्रक्रिया है जो पश्चिमी यूरोप और उत्तरी अमेरिका में 17 वीं शताब्दी से 19 वीं शताब्दी में विकसित हुई हैं और 19 वीं और 20 वीं शताब्दी में दक्षिण अमेरिका, एशियाई और अफ्रीकी महाद्वीपों के साथ अन्य यूरोपीय देशों में फैल गई हैं। लर्नर (1962) की अवधारणा मुख्य रूप से पश्चिमीकरण पर आधारित है। उनके अनुसार, ''आधुनिकीकरण में सार्वजनिक संस्थानों के साथ–साथ निजी आकांक्षाओं को छूती हुई प्रत्यक्षवादी भावना शामिल है।''

आधुनिक भारत के संदर्भ में, श्रीनिवास ने कहा कि आधुनिकीकरण उन्नत ''मीडिया एक्सपोजर'' द्वारा चिह्नित है, जो व्यापक आर्थिक भागीदारी (प्रति व्यक्ति आय) राजनीतिक भागीदारी (मतदान) और सामाजिक गतिशीलता में हुई वृद्धि से जुड़ा है। योगेंद्र सिंह (1973) द्वारा दिखाए गए एक मॉडल के माध्यम से बताया ''कि समाज, आधुनिकता की परम्परा से बदलता है और इस तरह छोटी–छोटी परंपरा धीरे–धीरे महान परंपरा में बदल जाती है।''

उपरोक्त चर्चा से यह स्पष्ट है कि आधुनिकीकरण की अवधारणा का पता लगाने की आवश्यकता है। कुछ हद तक आधुनिकीकरण पर शोध साहित्य में, कई सामाजिक–विज्ञान विषयों के विशिष्ट सैद्धांतिक लेख देखना संभव है, जो सामाजिक परिवर्तन के परिणामों पर आधारित हैं। सामाजिक वैज्ञानिकों ने अपने व्यक्तिगत स्तर पर आधुनिकता की संकल्पना की है जिसमें कुछ सामाजिक क्षेत्रों से संबंधित दृष्टिकोण और व्यवहार पर जोर दिया गया है। व्यक्तियों के व्यवहार और व्यवहारिक क्रिया प्रवृत्तियों में परिवर्तन देखकर अवधारणा को परिचालित किया जा सकता है।

हालांकि, अलग–अलग वैज्ञानिकों के दृष्टिकोण अलग–अलग हैं, जिन्हें संक्षेप में निम्न क्षेत्रों को प्रस्तुत किया जा सकता है–

- आधुनिकीकरण को किसी के आंतरिक गुणों के संदर्भ में माना जाता है जैसे कि किसी के व्यवहार में तर्कसंगतता, निष्पक्षता, व्यापक सोंच और लचीलेपन की वृद्धि।
- एक समाजशास्त्री के लिए, आधुनिकीकरण विभेदीकरण की प्रक्रिया है जो आधुनिक समाजों की विशेषता है।
- एक अर्थशास्त्री के लिए आधुनिकीकरण का अर्थ आर्थिक विकास और भौतिक उन्नति से है।
- आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के अनुप्रयोग के संबंध में, यह आधुनिक समाज के तकनीकी उन्नत मॉडलों को अनिच्छा से पश्चिमीकरण के साथ संदर्भित करता है।

इसके अलावा, आधुनिकीकरण की अवधारणा में निम्नलिखित विशेषताएं प्रतीत होती हैं–

- पुराने से नए में बदलाव।
- परिवर्तन के लिए समायोजन।
- परिवर्तन की प्रक्रिया के प्रति गतिशील और बाहरी दृष्टिकोण।
- कौशल के लिए क्षमताओं का विकास
- परिवर्तन की प्रक्रिया को पूरा करने के लिए व्यवहार।
- आर्थिक और भौतिक प्रगति के लिए नए तकनीकी मॉडल का विकास

शिक्षा, जिसे आधुनिक समाज में कौशल, दृष्टिकोण और मूल्य प्रदान करने वाले एक संगठित प्रयास के रूप में देखा जाता है, और जो समाज में रहने योग्य बनाने की प्रथम सीढ़ी है, आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। फ्रेडरिक हार्बिन्सन और चार्ल्स ए. मेयर्स (1980) द्वारा दिया गया बयान 'शिक्षा वह कुंजी है जो आधुनिकता के द्वार को खोलती है' और संबद्ध क्षेत्रों में अनुसंधान को बढ़ावा दिया है। शिक्षा के क्षेत्र के जानकारों का मानना है कि आधुनिकीकरण का मतलब शिक्षा, शिक्षित और कुशल नागरिकों का निर्माण करके उन्हें समाज में फैलाना है, जिससे वह समाज में आधुनिकीकरण को बड़े स्तर पर विकसित कर सकें।

स्वतंत्र भारत में समाज के स्वरूप और उसके आदर्शों में एक और परिवर्तन आया। शिक्षा को राष्ट्र के सर्वांगीण विकास को प्राप्त करने का उद्देश्य दिया गया था। भारत में शिक्षा आधुनिक भारत की जरूरतों और उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए उपयोगिता और आदर्शवाद के बीच एक संश्लेषण का प्रतिनिधित्व करती है। प्रौद्योगिकी के उपयोग के कारण आज का सामाजिक जीवन आदिम सामाजिक जीवन से बहुत अलग है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी में हाल के उल्लेखनीय विकासों ने मानवीय धारणा और मूल्यों में परिवर्तन किया है। नतीजतन, हाल ही में शिक्षा को दिए गए उद्देश्यों में से एक क्षमता विकसित करना और तकनीकी और व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करना है। हाई–टेक विकास के अलावा, आर्थिक परिवर्तनों ने भी सामाजिक जीवन को काफी प्रभावित किया है। एस.एन. ईसेनस्टेड (1966) ने ठीक ही कहा है कि, आधुनिक समाजों में शैक्षणिक संस्थानों में विशेषताओं के विश्लेषण के लिए यह शायद सबसे अच्छा प्रारंभिक बिंदु है, जो कि आधुनिकता की मांग के साथ विकसित होने वाली शैक्षिक सेवाओं की मांग और आपूर्ति के अनुरूप हो।

योगेंद्र सिंह के शब्दों में, ''शिक्षा भारत में आधुनिकीकरण के सबसे प्रभावशाली साधनों में से एक रही है। इसने लोगों की राष्ट्रवाद, उदारवाद और स्वतंत्रता के लिए भावनाओं को प्रेरित किया है। यह अकेले ही प्रबुद्ध बुद्धिजीवियों के विकास के लिए जिम्मेदार रही है। जिसने न केवल स्वतंत्रता के लिए एक आंदोलन को आगे बढ़ाया बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक सुधारों के लिए एक अथक संघर्ष भी किया।'' शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण कार्य आधुनिकीकरण है। आधुनिकीकरण एक व्यापक अवधारणा है जिसका उद्देश्य समाज में गहन गुणात्मक और मात्रात्मक परिवर्तनों को धारण करना, उनका वर्णन करना और उनका मूल्यांकन करना है।

आधुनिकीकरण लाने में शैक्षणिक संस्थानों की भूमिका के बारे में पश्चिम और भारत में शोध किए गए हैं। उनमें से अधिकांश ने दोनों के बीच सकारात्मक संबंध दिखाया है। हालाँकि, सॉन्डर्स (सॉन्डर्स, जॉन वी.डी. 1969) ने ब्राजील में शिक्षा और आधुनिकीकरण पर अपने अध्ययन में ज्ञात किया है कि यह आधुनिकता को कमजोर करता है। उन्होंने टिप्पणी की, ''ब्राजील के स्कूल में, विशेष रूप से प्राथमिक स्तर पर, जहां व्यक्तित्व विकास पर उनका प्रभाव सबसे अधिक होता है, व्यक्तित्व लक्षणों को विकसित करने के बजाय आधुनिकीकरण के लिए जोर देते हैं, और जो समाज के नवप्रवर्तक को कमजोर करता है।'' लर्नर ने अपने शोध कार्य में ''पारंपरिक समाज के पारित होने पर जोर दिया'' कि साक्षरता, आधुनिकीकरण प्रक्रिया में अंतर्निहित बुनियादी व्यक्तिगत कौशल है, और जो प्रतिभागी समाज को विकसित करती

है। तकनीकी और सामाजिक–राजनीतिक विन्यास के कारण महिलाओं की धारणाओं में बदलाव की भूमिकाओं के संबंध में, शिक्षा के क्षेत्र ने महिलाओं के लिए नए आयाम और रूपरेखा प्रदान की है। विभिन्न विषयों के विभिन्न पाठ्यक्रमों में भाग लेकर महिलाओं के अध्ययन को बढ़ावा दिया जा रहा है और महिला विकास के सक्रिय कार्यक्रमों को शुरू करने के लिए शैक्षणिक संस्थानों को प्रोत्साहित किया जा रहा है।

भारत की स्वतंत्रता के पूर्व की अवधि के दौरान, समाज में महिलाओं की सामाजिक अक्षमताओं को दूर करने की आवश्यकता पर लोगों के मन में जागरूकता और चेतना जगाई गई थी। महिला संगठन, मध्यवर्गीय शहरी महिलाओं की जरूरतों और मुद्दों का प्रतिनिधित्व करने और आवाज उठाने से उनके लिए शिक्षा के द्वार खोले गए थे। महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी से महिलाओं की गतिशीलता में वृद्धि हुई। आधुनिकीकरण की जटिल प्रक्रिया ने विभिन्न अंशों में महिलाओं की स्थिति को प्रभावित किया है। इस अवधि में महिलाओं ने अपने तक सीमित क्षेत्रों में रोजगार की तलाश में अधिक से अधिक आर्थिक रूप से स्वतंत्र होकर अपने पैरों पर खड़े होने की आवश्यकता महसूस की।

भारत में ब्रिटिश शासन के दौरान दो प्रमुख आंदोलन हुए जिन्होंने महिलाओं की स्थिति को प्रभावित किया। ये थे उन्नीसवीं सदी में सामाजिक सुधार आंदोलन और बीसवीं सदी का राष्ट्रीय आंदोलन। ब्रिटिश शासकों के उदार दृष्टिकोण और मूल्यों से प्रभावित होकर समाज सुधारकों ने लिंग समानता की वकालत करने की कोशिश करके महिलाओं की स्थिति में कुछ सुधार लाने के लिए यहां–वहां प्रयास किए। एक और बहुत शक्तिशाली शक्ति जिसने महिलाओं के प्रति दृष्टिकोण को बदलने में मदद की, वह गांधीवादी चरण के दौरान राष्ट्रवादी आंदोलन थी। राष्ट्रवादी आंदोलन में महिलाओं ने खुद को समूहों में संगठित किया और जुलूस में शामिल होकर, पुलिस फायरिंग का सामना करा और वे जेल जाने के लिए भी तैयार थीं (संजय केतन जेना, 1993)।

भारत में, 19वीं शताब्दी से, जब समाज में महिलाओं की निम्न स्थिति के खिलाफ पहली आवाज उठाई गई, समाज सुधारकों ने महिलाओं की शिक्षा को उच्च प्राथमिकता दी। 1949 में कलकत्ता में बेथ्यून स्कूल की स्थापना की गई और कुछ स्वदेशी प्रयासों के साथ गुजरात और महाराष्ट्र में इसी अवधि के दौरान लड़कियों के लिए स्कूलों की स्थापना से, महिलाओं की शिक्षा की स्वीकृति की दिशा में पहला कदम उठाया गया था (देसाई राय, 1987)। हालांकि उदारवादी सुधारकों ने लड़कियों के लिए शिक्षा के मूल्य और इसकी सामग्री को लड़कियों के स्तर के लिए मान्यता दी थी। शिक्षित परिवार में महिलाओं की भूमिका उनकी सीमित धारणा से बहुत अधिक निर्धारित थी। यह विश्वास था, कि समाज के परिवर्तन के विशाल कार्य में, जिसमें शिक्षित मध्यम वर्ग के पुरुष शामिल थे, यदि महिलाओं को शिक्षा दी जाती हैं, तो न केवल समाज में हो रहे परिवर्तनों की सराहना की जाएगी बल्की समाज इस परिवर्तन की प्रक्रिया को तेज करने में भी सहयोग करेगा। उन्होंने महिलाओं की पारंपरिक पत्नी, माँ की भूमिका में कभी भी बदलाव की परिकल्पना नहीं की। हालाँकि यह समाज सुधारक लड़कियों को शिक्षा देने के मूल्य को स्वीकार कराने का माहौल तैयार करने में सफल रहे। (नतेसेन एन.डी.य कर्वे, डी.के., 1936, रानाडे, एम.जी., 1902, मजूमदार, वीना, 1985)।

समाज सुधारकों द्वारा की गई उत्कृष्ट दलीलों के बावजूद, महिला शिक्षा का प्रसार व्यापक नहीं था। राष्ट्रवादी उभार के दौरान, विशेष रूप से तीस के दशक के बाद, एक महत्वपूर्ण बदलाव तब शुरू हुआ जब महिलाओं ने राष्ट्रवादी आंदोलन में सक्रिय भाग लिया और ऐसे संगठनों का निर्माण किया जहां शिक्षा की आवश्यकता पर लगातार जोर दिया गया। बेशक, इस चरण के दौरान भी महिलाओं की भूमिका की धारणा में ज्यादा बदलाव नहीं आया था, लेकिन फिर भी धीरे–धीरे यह महसूस किया जा रहा था कि शिक्षा उनकी व्यापक भागीदारी के लिए आवश्यक अंग है। पहले की अवधि की तुलना में, इस चरण के दौरान अधिक महिलाएं स्कूलों और कॉलेजों में जाती थीं, और कुछ ने शिक्षण, चिकित्सा और कानून के व्यवसायों में प्रवेश किया था। लेकिन इनमें से कुछ प्रगति के बावजूद महिला शिक्षा की वृद्धि बहुत धीमी रही थी। आजादी की पूर्व संध्या पर केवल आठ प्रतिशत महिलाएं ही साक्षर थीं। शिक्षा महिलाओं की स्थिति के पूर्ण प्रचार और सुधार का आधार है और इस दशक के तीन लक्ष्य समानता, विकास और शांति, तीन उप विषयों रोजगार, स्वास्थ्य और शिक्षा से अटूट रूप से जुड़े हुए हैं। इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए पुरुषों द्वारा जिम्मेदारी साझा करने की आवश्यकता होती है।

समकालीन महिलाओं तक राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य को कवर करने वाले व्यापक बदलाव के लिए, निम्नलिखित आयामों पर ध्यान देने की आवश्यकता है–

- प्राचीन भारत में मातृत्व की विचारधारा।
- दार्शनिकों और समाज सुधारकों द्वारा कल्पना की गई महिलाओं की स्थिति।
- आधुनिकीकरण और महिलाएं।

समाजशास्त्र विभाग कुवेम्पु विश्वविद्यालय (1992) ''महिला और विकास, आलोचनात्मक पहलू'' मुद्दों पर दो दिवसीय संगोष्ठी में महिलाओं के विकास हेतु निम्नलिखित पहलुओं पर विचार–विमर्श किया गया–

1. महिला और विकास, महत्वपूर्ण मुद्दे
2. महिला और शक्ति
3. महिलाएं और अर्थव्यवस्था
4. महिला और जनसंचार माध्यम
5. महिला और शिक्षा
6. महिला और सार्वजनिक स्वास्थ्य।

महिलाओं के मामले में, यह सच में कहा गया है कि, ''पालने को हिलाने वाला हाथ दुनिया पर राज कर सकता है।'' नारी की डोरी में वह क्रांतिकारी शक्ति छिपी है जो धरती पर जन्नत स्थापित कर सकती है। वर्तमान में नागालैंड में आओ (।ठ) महिलाओं के बीच शिक्षा का स्तर एक बोधगम्य ऊंचाई प्राप्त कर चुका है। वहाँ महिलाओं ने सभी गतिविधियों में भाग लिया है और महिलाओं ने बर्तमान की भूमि बनाने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। महिलाऐं, शिक्षक, पादरी, महिला पुलिस, डॉक्टर, नर्स, सिविल सेवाओं में प्रशासक, सामाजिक कार्यकर्ता, व्यावसायिक उद्यमी और अन्य सभी कार्यों को कर रही हैं। इस प्रकार महिलाओं की शिक्षा ने समाज के विभिन्न क्षेत्रों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है। आओ समुदाय में आधुनिकता के मामले में पुरुषों की तुलना में महिलाओं की श्रेष्ठता पर ध्यान देना आश्चर्यजनक है। हालांकि नागा परंपरागत रूप से पितृसत्तात्मक समाज हैं, फिर भी, महिलाओं को शिक्षा और रोजगार के लिए समान दर्जा और अवसर दिए जाते हैं।

सन्दर्भ सूची


1. डेविड एल. सिल्स, इंटरनेशनल इनसाइक्लोपीडिया ऑफ सोशल साइंसेज (वॉल्यूम 9 और 10), मैकमिलन कंपनी और फ्री प्रेस, न्यूयॉर्क, सहधलियर–मैकमिलन प्रकाशक, लंदन 1972.
2. इनकेलेस और स्मिथ, छह विकासशील देशों में ''बीकमिंग मॉडर्न'', कैम्ब्रिज मैसाचुसेट्सः हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1974.
3. आइन्सनस्टेड एस.एन. ''मॉडर्नाइजेशन प्रोटेस्ट एंड चेंज'' प्रेंटिस हॉल ऑफ इंडिया, प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 1969.
4. लर्नर डैनियल, ''द पासिंग ऑफ ए ट्रेडिशनल सोसाइटी'' द फ्री प्रेस, न्यूयॉर्क कोलियर मैक मिलन लिमिटेड, लंदन, 1968.
5. श्रीनिवास एम.एन. ''सोशल चेंज इन मॉडर्न इंडिया'', ओरिएंट लॉन्गमैन लिमिटेड, नई दिल्ली, 1947.
6. सिंह योगेंद्र, ''भारतीय परंपरा का आधुनिकीकरण'', रावत प्रकाशन, जयपुर, 1986.
7. कुमार, बी.बी. ''नागा समाज में आधुनिकीकरण'', ओमसोन्स प्रकाशन नई दिल्ली, 1993.
8. ओ. ईसेनस्टेड एस.एन. ''मॉडर्नाइजेशन प्रोटेस्ट एंड चेंज'' प्रेंटिस हॉल ऑफ इंडिया, प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 1968.
9. सिंह योगेंद्रः ''भारतीय परंपरा का आधुनिकीकरण'', रावत प्रकाशन, जवाहर नगर, जयपुर, 1973.
10. सॉन्डर्स, जॉन वी.डी. ''ब्राजील में शिक्षा और आधुनिकीकरण, लुइसाना स्टेट यूनिवर्सिटी, 1969.
11- Rana Singh. Banaras: Making of India's Heritage City, Cambridge Scholars Publishing 2009.

12- Lina Kashyap. The Impact of Modernization on Indian Families: The Counselling Challenge, Springer 2004.
13- Bharat S. Research on family structure and problems, Tata Institute of Social Sciences 1991.
14. लर्नर डेम, ''पारंपरिक समाज का पारित होना'', फ्री प्रेस, न्यूयॉर्क, कोलियर मैक मिलन लिमिटेड, लंदन, 1968.
15. जेना संजय केतनः ''कामकाजी महिलाएं और आधुनिकीकरण'', आशीष पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली 110026.
16. बुच, एम.बी., शिक्षा में अनुसंधान का चौथा सर्वेक्षण 1983–88 खंड 2, महिला शिक्षा में अनुसंधानय एक रुझान रिपोर्ट।
17. अग्रवाल जे.सी., दोआबा विश्व शिक्षा श्रृंखला– 7, 1983 से दुनिया में शैक्षिक दस्तावेजों का सर्वेक्षण, दोआबा हाउस, 1688, दिल्ली।
18. मिल्स, जे.पी., ''द एओ नागास'', ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, बॉम्बे, 1973.